12
“मिल-की-से-कौन?”
(7:1-8:2)

हम इस बहस के मुख्य भाग में आ गए हैं कि यीशु की याजकाई लेवियों की याजकाई से बड़ी है। लेखक ने इस अवधारणा के साथ आरम्भ किया कि यीशु “मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक” है। अध्याय 5 में उसने दो बार यह बात कही (आयतें 6, 10)। यहां पर यह कहते हुए कि उसके पाठक आत्मिक “अन्न” (देखें 5:12-14) के लिए तैयार नहीं हैं, यानी वे उन विषयों को समझने को तैयार नहीं थे जिनकी चर्चा हम करने वाले हैं। फिर उसने आत्मिक रूप में न बढ़ने के खतरे पर चर्चा करने के लिए समय निकाला। ताड़ना के अन्त में उसने फिर से ज़ोर दिया कि यीशु “मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महा याजक” है (6:20)। अन्त में वह इन शब्दों के महत्व पर चर्चा करने को तैयार था। अध्याय 7 में उसने ऐसा किया।

यदि आप लोगों से पूछें कि मलिकिसिदक कौन था, तो जवाब होगा कि “मिल-की-से-कौन?” पुराने नियम के इस पात्र को “रहस्यमयी मलिकिसिदक” नाम दिया गया है। सदियों तक लोग हमारे वचन पाठ के इन शब्दों पर उलझे रहे: “जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है” (7:3)। यह मलिकिसिदक कौन था, और लेखक के यह कहने का क्या अर्थ था कि यीशु मलिकिसिदक की रीति पर याजक है? इस पाठ में हम इन्हीं प्रश्नों पर बात करेंगे।

तीन वचन

इब्रानियों की पुस्तक के अलावा बाइबल में मलिकिसिदक के केवल दो हवाले हैं: उत्पत्ति 14:18-20 में अब्राहम के साथ उसकी मुलाकात का संक्षिप्त विवरण और भजन संहिता 110:1-4 का वचन जो इब्रानियों 7:1-28 में दोहराया गया है। आइए न वचनों को देखते हैं।

याजकाई का चित्रण (उत्पत्ति 14:18-20)[1]

उत्पत्ति की पुस्तक की तीन आयतों से हमें मलिकिसिदक की सारी जानकारी मिलती है। मलिकिसिदक को “शालेम का राजा” और “परम प्रधान परमेश्वर का याजक” बताया गया है। अब्राहम के कई राजाओं पर विजयी युद्ध से लौटने पर मलिकिसिदक ने उसे आशीष दी। फिर अब्राहम ने उसे लूट के माल का दशमांश दिया।

मलिकिसिदक लेवी के गोत्र में से नहीं था। (लेवी का जन्म कई साल बाद होना था।) हमें यह नहीं बताया गया कि मलिकिसिदक कैसे या किस आधार पर याजक बना; परन्तु संकेत मिलता है कि उसकी याजकाई मानवीय वंशावली पर आधारित नहीं थी।

याजकाई की भविष्यवाणी हुई (भजन संहिता 110:1-4)

भजन संहिता 110 मसीहा से सम्बन्धित भजन है।[2] नये नियम में आम तौर पर इसमें से वचन दौहराए जाते हैं। इब्रानियों 1:13 में लेखक ने भजन संहिता 110:1 से उद्धृत करके इन शब्दों को यीशु पर लागू किया। ध्यान दें कि भजन संहिता 110 मसीहा को ''मलिकिसिदक की रीति पर'' (6:20) राजा (आयतें 1-3) और याजक (आयत 4) दोनों दिखाता है।

याजकाई सिद्ध हुई (इब्रानियों 7:1-28)

यह हमें इब्रानियों 7 में ले आता है जहां परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक ने घोषणा की कि जिस बात का चित्रण उत्पत्ति की पुस्तक में दिया गया था और भजन संहिता में उसकी भविष्यवाणी हुई वह यीशु में पूरा हुआ (सिद्ध हुआ)। *यीशु* ''मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का महा याजक'' है।

छह समानान्तर बातें

यीशु को हमारा महायाजक मानने से पहले यह साबित किया जाना आवश्यक था कि वह वैध ढंग से सही है। लेखक ने यह काम यह दिखाते हुए किया कि यीशु हारून की रीति पर नहीं बल्कि मलिकिसिदक की रीति पर महा याजक है। यीशु मलिकिसिदक की तरह याजक किस अर्थ में है। इब्रानियों 7 अध्याय उनकी याजकाइयों की मिलते-जुलते होने के कई ढंगों का सुझाव देता है।[3]

अपने शाही स्वभाव में

लेवियों की याजकाई के अधीन याजक और राजा के पद बिल्कुल अलग-अलग पद्धतियां थीं, परन्तु मलिकिसिदक ने राजा और याजक के पदों को मिला दिया (7:1)। इसी प्रकार से यीशु याजक (7:17; 8:1) और राजा दोनों है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, मसीह अर्थात मेमने को ''प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा'' बताया गया है (प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16; तुलना 1 तीमुथियुस 6:15)।

अपने नैतिक स्वभाव में

मलिकिसिदक के नाम और शीर्षक से संकेत मिलता था कि उसमें धार्मिकता और शान्ति के गुण हैं (इब्रानियों 7:2)। इस बात को इस तथ्य से रेखांकित किया जाता है कि अब्राहम ने कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को हराने के बाद लूट का दशमांश यानी उसे देना था (कानूनी विवशता) के कारण नहीं बल्कि इसलिए कि उसे देना चाहा (आयत 4; देखें उत्पत्ति 14:17-20)।

लेवियों की याजकाई में नैतिक चरित्र का कोई लेन देन नहीं था। याजक होना वंशावली की बात थी। यदि किसी व्यक्ति की सही खून रेखा हो (और वह शारीरिक रूप में दोष से अयोग्य न हो) तो वह याजक होता है। सही खून रेखा होने वाला व्यक्ति याजक नहीं बन सकता था, चाहे वह कितना भी परमेश्वर का भय मानने वाला क्यों हो। इसमें अपने आप में एक तर्क है कि

मलिकिसिदक की तरह यीशु अपने जीवन के उच्च गुण के कारण याजक था (आयतें 16, 26), न कि अपनी वंशावली के कारण।

अपने गोत्र रहित होने में

उत्पत्ति की पुस्तक की आरम्भिक आयतों में जहां मलिकिसिदक आता है, व्यक्तिगत विवरणों की कोई बात नहीं है कि वह कहां से आया या उसका क्या हुआ। इसका महत्व केवल विचार करने पर पता चलता है। यह विवरण वंशावलियों की भरमार वाली पुस्तक में मिलता है। यह विवरण मूसा द्वारा लिखा गया था, जिसने याजकों के सम्बन्ध में बड़े कठोर नियम बनाए थे; परन्तु मलिकिसिदक के याजक बनने के ढंग पर कोई जानकारी नहीं है। परमेश्वर की प्रेरणा से इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस खामोशी को यह दिखाने के लिए पकड़ा कि मलिकिसिदक की याजकाई लेवियों की याजकाई की तरह वंशावली पर निर्भर *नहीं* थी (आयत 3)। इसलिए यीशु यहूदा के गोत्र में से होने के बावजूद (आयत 14) हमारा महायाजक हो सकता था।

अपने निरन्तर होने में

पिछले तर्क के साथ आगे मलिकिसिदक की याजकाई के खत्म होने का कोई रिकॉर्ड नहीं है, इस कारण एक अर्थ में इसे *निरन्तर* याजकाई के रूप में माना जा सकता है (आयतें 3, 24)–जो यीशु के मामले में बिल्कुल सही है। यीशु के पास ''सदा की'' याजकाई है (आयतें 16, 17, 25, 28)। यह उस लेवीय याजकाई से अलग थी जिसके स्थान पर यह दी जा रही थी (आयतें 11, 12)।

अपने श्रेष्ठ होने में

यह चर्चा का मुख्य बिन्दु है। यहूदी मसीही लोगों को गैर मसीही यहूदियों से अपने आपको कम समझने के आवश्यकता नहीं थी। मसीही लोगों के पास न केवल महायाजक है बल्कि याजकाई का उनका प्रबन्ध यहूदी मत की याजकाई से श्रेष्ठ है।[4] आगे लेखक के कुछ अतिरिक्त तर्क दिए गए हैं कि हम मलिकिसिदक की याजकाई को लेवियों की याजकाई से श्रेष्ठ क्यों मानें:

- यहां तक कि पिता अब्राहम ने भी मलिकिसिदक को अपनी लूट का दशमाश दिया (आयत 4)।
- मलिकिसिदक ने अब्राहम को आशीष दी (बड़े का काम) (आयतें 6, 7)।
- एक अर्थ में लेवी ने अपने पड़दादा अब्राहम के द्वारा मलिकिसिदक को दशमाश दिया।
- लेवीय याजकाई से चाहे सिद्धता नहीं आई (आयतें 11, 19), मलिकिसिदक की रीति पर मसीह की याजकाई से सिद्धता आती है (आयतें 19, 25)।
- लेवियों को बिना शपथ के याजक बनाया जाता था, परन्तु भजन संहिता 110:4 मलिकिसिदक की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में शपथ की बात करता है (इब्रानियों 7:20, 21)।
- लेवीय याजकों को लगातार बलिदान चढ़ाने पड़ते थे जबकि यीशु को एक ही बार चढ़ाना पड़ा (आयत 27)।

अपने एकल होने में

जहां तक परमेश्वर की प्रेरणा से लिया गया वचन बताता है लेवीय प्रबन्ध के बहुत से याजकों के विपरीत पुराने नियम में मलिकिसिदक की याजकाई में केवल *एक* याजक था (आयत 23)। आज एक ही महा याजक की आवश्यकता है क्योंकि यीशु ने "एक ही बार सदा के लिए" बलिदान दे दिया है (देखें 10:10) और हमारे विनती करने वाले के रूप में (देखें 2:17, 18; 4:14-16) सर्वदा जीवित है (देखें 7:24, 25, 27)।

एक बात

पवित्र शास्त्र के किसी वचन को पढ़ने पर कई बार यह तय करना कठिन हो जाता है कि लेखक का उद्देश्य क्या है। इब्रानियों 7 अध्याय के साथ ऐसी कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि लेखक ने अपना उद्देश्य स्पष्ट कर दिया। अगला अध्याय इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है:

> अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सबसे बड़ी बात यह है, कि हमारा ऐसा महा याजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दहिने जा बैठा। और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, बरन प्रभु ने खड़ा किया था (8:1, 2)।

यह अद्भुत महा याजक, जो "मलिकिसिदक की रीति पर" है अर्थात जिसकी श्रेष्ठ याजकाई है, हमारा महा याजक। वह हमारा "स्वर्ग के तम्बू" का सेवक है। उसने हमारे लिए सदा के लिए एक ही बलिदान देकर सदा के लिए महानय बलिदान भेंट कर दिया (7:27; 9:14, 24-28)। वह हमारे लिए विनती करते हुए हमारे लिए सेवकाई करता रहता है (4:14-16)। "याजक" के लिए लातीनी भाषा के शब्द (*pontifex*) का अर्थ है "पुल बनाने वला।"[5] अपनी मृत्यु और निरन्तर विनती के द्वारा यीशु हमारे और परमेश्वर के बीच "पुल बनाता" है। जैसा कि एक लेखक ने कहा है, वह हमारा "प्रधान सेवक" है।[6]

सिखाने वाले के लिए नोट्स

इस पाठ का एक वैकल्पिक शीर्ष "रहस्यमयी मलिकिसिदक" हो सकता है। एक और सम्भावना "क्या आप कुछ ठोस अन्न के लिए तैयार हैं?"

विनी फ्रेड क्लार्क ने डेंटन, टैक्सस में 1983 की लैक्चरशिप में "मलिकिसिदक की रीति पर" नामक एक बेहतरीन पाठ प्रस्तुत किया।[7] इसके अलावा जी. सी. ब्रिवर ने प्रवचनों की अपनी पुस्तक में "मसीह और मसीही का महायाजक" पर एक पाठ जोड़ा है।[8]

टिप्पणियां

[1]इस भाग के तीन उप-शीर्षक विनिफ्रेड क्लार्क, "आफ्टर द ऑर्डर ऑफ़ मलिकिसिदक," *सेकंड एनुअल डेंटन लेक्चर्स* (1983): 123-30 से लिए गए हैं। [2]यह एक शाही भजन है जो दाऊद और उसके उत्तराधिकारियों पर लागू होता है। यह यीशु अर्थात दाऊद के पुत्र का पूर्ण और अन्तिम रूप में लागू होता है। [3]इस पाठ में आगे चार्ट देखें। [4]इस बात के कुछ अर्थों को हमारे अगले अध्ययन "मसीहियत उत्तम है!" में देखेंगे। [5]विलियम बार्कले,

दि लैटर टू दि हिब्रूस, 3रा संस्क., संशो. व अपडेटिड, दि न्यू डेली स्टडी बाइबल (लूईसविल्ले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रैस, 2002), 37. [6]रॉबर्ट मिलिगन, *एपिस्टल टू द हिब्रूस* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1954), 218. [7]क्लार्क। [8]जी. सी. ब्रेवर, *ब्रेवर'स सरमन्स: क्राइस्ट क्रूसिफाइड* (नैशविल्ले: बी. सी. गुडपेसचर, 1952), 119–36.

मलिकिसिदक की याजकाई: परछाई	यीशु की याजकाई: वास्तविकता
राजा और याजक (7:1)	याजक और राजा (देखें 1 तीमुथियुस 6:15)
धार्मिकता और शान्ति से पहचान (7:2)	जीवन का *सबसे ऊंचा* गुण (7:16, 27)
लेवी के गोत्र का नहीं (7:3क)	लेवी के गोत्र का नहीं (7:14)
उसकी याजकाई की समाप्ति का *रिकॉर्ड* नहीं (7:3ख)	"सदाकाल की" याजकाई (7:16, 17, 25, 28)
लेवीय याजकाई से श्रेष्ठ (7:7)	एक श्रेष्ठ याजकाई (देखें 9:11)
वचन में मसीह की तुलना में केवल *एक* याजक (7:1–8:2)	आज केवल एक महायाजक की आवश्यकता है (देखें 10:10)